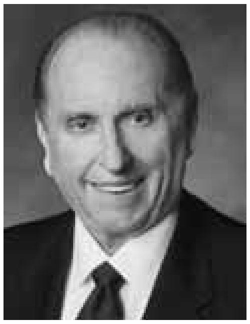

अध्यक्ष थॉमस एस. मॉनसन द्वारा

पवित्र स्थानों में खड़े रहेना

जीवन के तूफानों और कठिनाइयों का सामना करने के लिए—उससे प्रार्थना करना और उसकी प्रेरणा पाने सहित—स्वर्गीय पिता के साथ बातचीत करना—जरूरी है ।

मेरे प्यारे भाइयों और बहनों, आज सुबह हमने सुंदर संदेशों को सुना है, और मैं उन सब की प्रंशसा करता हूं जिन्होंने इसमें भाग लिया है । हम विशेषरूप से एल्डर रॉबर्ट डी. हेल्स के बीमारी से अच्छे होनें के बाद फिर से हमारे बीच आने पर बहुत प्रसन्न हैं । बॉब, हम तुम से प्यार करते हैं ।

जब मैं मनन कर रहा था मैं आज सुबह आपसे क्या बात करूं, मैं उन विचारों और अनुभूतियों को बांटने के लिए प्रभावित हुआ जो मैं सोचता हूं कि वर्तमान समय के और अनुकूल है । मैं प्रार्थना करता हूं कि मुझे अपनी बात कहने में मार्गदर्शन मिले ।

मुझे इस पृथ्वी पर रहते हुए 84 साल हो गए हैं । एक छोटा सा उदाहरण आपको देता हूं, मैं उस वर्ष पैदा हुआ था जब चार्ल्स लिंडबर्ग ने न्यू यॉर्क से पैरिस बिना रूके एक इंजन के, एक सीट वाले, हवाई जहाज में, अकेले पहली उड़ान भरी थी । तब से इन 84 सालों में बहुत कुछ बदल गया है । मनुष्य द्वारा चांद की यात्रा करना बहुत पुरानी बात हो गई है । असल में, अतीत की विज्ञान की काल्पनिक कथाएं आज की सच्चाई बन गई हैं । और इस सच्चाई के लिए, हमारे समय की तकनीकी का धन्यवाद, जो इतनी तेजी से बदल रही है कि इसके साथ-साथ चल पाना हमारे लिए कठिन गया—यदि हम यह सबकुछ करते भी हैं । हमारे लिये जिनको नंबर घुमाकर डायल करने वाले टेलिफोन और पुराने टाईप राइटर याद है, उनके लिए आज की तकनीकी बहुत ही अचरज भरी है ।

समाज के नैतिक मूल्य भी बहुत तेजी से बदल रहे हैं । व्यवहार जो पहले अनुचित और अनैतिक समझे जाते थे वे आज न केवल उचित माने जाते हैं बल्कि बहुत से लोगों द्वारा अपनाए भी गए हैं ।

हाल ही में मैंने *वॉल स्ट्रीट जर्नल* में ब्रिटेन के यहूदियों के मुख्य रब्बी, जॉनाथन सॅक्स का लेख पढ़ा था । बहुत सी अन्य बातों के साथ, वह लिखता है— : ''1960 में लगभग सभी पश्चिमी समाज में नैतिक क्रांति हुई थी, जिसमें उन पारंपरिक नियमों का परित्याग कर दिया गया जिसके अनुसार लोग अपने व्यवहार को नियंत्रण करते थे । आप सिर्फ बीटल्स का ''ऑल यू नीड लव'' गाओ । ईसाई और यहूदी समाज के नैतिक स्तरों को लोगों ने छोड़ दिया था । इसके स्थान पर यह कहावत आ गई : *जो आपको अच्छा लगता है उसे करो* । दस आज्ञाओं को दस रचनात्मक सुझावों के रूप में दुबारा लिखा गया ।

रब्बी सॅक्स खेद से आगे बताते हैं :

''हमने अपने नैतिक नियमों को इतनी लापरवाही से छोड़ दिया जैसे हम अपने आर्थिक स्रोतों को गंवा रहे हों । ...

[संसार का] बहुत बड़ा हिस्सा जहां पर धर्म की बात अतीत की बात हो गई है और उन सांस्कृतिक विचारों का विरोध कोई नहीं करने वाला है जो लोगों को वस्तुएं खरीदने, धन व्यय करने, भड़कीले वस्त्र पहनने, और दिखावा करने के लिए उकसाते हैं । नैतिकता प्रचलन खत्म हो गया है, अंतरात्मा कमजोर लोगों के लिए है, और सबसे महत्वपूर्ण आज्ञा है ''तुम पाप करते हुए पकड़े न जाना ।''[1]

मेरे भाइयों और बहनों, यह—दुर्भाग्यवश—हमारे आस-पास के संसार का वर्णन करती हैं । क्या हमें बहुत अधिक चिंता करने और सोचने की जरूरत है कि हम कैसे इस संसार में जीवित रह पाएंगे ? नहीं । असल में, हमारे जीवन में यीशु मसीह का सुसमाचार है, और हम जानते हैं कि नैतिकता अप्रचलित नहीं है, कि हमारा मार्गदर्शन करने के लिए हमारी अंतरात्मा है, और कि हम अपने कर्मो के लिए जिम्मेदार हैं ।

यद्यपि संसार बदल गया है, परमेश्वर के नियम निरंतर वही हैं । वे बदले नहीं हैं : वे बदलेंगे नहीं । दस आज्ञाएं वही—आज्ञाएं हैं । वे सुझाव नहीं हैं । इसका हर एक हिस्सा आज भी उतना ही जरूरी है जितना कि तब था जब परमेश्वर ने इन्हें इस्राएल के बच्चों को दिया था । यदि हम सिर्फ ध्यान से सुनें तो हमें अभी भी परमेश्वर की वाणी की प्रतिध्वनि सुनाई देगी :

''तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना ।

''तू अपने लिए कोई मूर्ति खोदकर न बनाना । ...

''तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना । ...

''तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना । ...

''तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना । ...

''तू खून न करना ।

‘‘तू व्यभिचार न करना ।

‘‘तू चोरी न करना ।

‘‘तू किसी के विरूद्ध झूठी साक्षी न देना । …

‘‘तू किसी के घर का लालच न करना ।’’[2]

हमारे व्यवहार के नियम स्पष्ट हैं ; इनमें किसी प्रकार का कोई बदलाव नहीं होगा । यह केवल दस आज्ञाओं में ही नहीं लेकिन पहाड़ पर उपदेश में भी पाया जाता है, उद्धारकर्ता के द्वारा हमें दिए गये थे जब वह स्वयं पृथ्वी पर थे । यह उसकी सारी शिक्षाओं में मिलता है । यह वर्तमान के प्रकटीकरण के शब्दों में पाया जाता है ।

स्वर्ग में हमारा पिता कल, आज और कल एकसमान है । भविष्यवक्ता मॉरमन हमें बताता है कि परमेश्वर ‘‘अनंत से एकसमान है और अनंत तक एकसमान रहेगा ।’’[3] इस संसार में जहां लगभग सबकुछ बदलता जा रहा है, उसकी स्थिरता ऐसी है जिस पर हम भरोसा कर सकते हैं, यह एक ऐसा लंगर है जिसे हम मजबूती से पकड़ते और सुरक्षित हो सकते हैं, कहीं ऐसा न हो भंयकर तूफान हमें उड़ा ले जाए ।

कई बार आपको ऐसा लग सकता है कि जो संसार के कामों को करते हैं वे आपसे अधिक आनन्द ले रहे हैं । आप में से कुछ को महूसस होता होगा कि गिरजे ने आप पर कई प्रतिबंध लगा दिए हैं । मेरे भाइयों और बहनों, मैं आपको बताता हूं, कि ऐसा कुछ भी नहीं है जो हमारे जीवन में अधिक खुशी या हमारी आत्मा को अधिक शांति ला सकता है सिवाय उस एहसास के जो उद्धारकर्ता का अनुकरण करने और आज्ञाओं को पालन करने से मिलता है । वह एहसास उन सब कामों में नहीं होता जिनमें यह संसार इतना व्यस्त रहता है । प्रेरित पौलुस ने इस सच्चाई को बताया था : ‘‘प्राकृतिक मनुष्य परमेश्वर की आत्मा द्वारा प्रकाशित सत्य को ग्रहण नहीं करता क्योंकि उसके लिए वे बातें निरी मूर्खता होती हैं, वह उन्हें समझ नहीं पाता क्योंकि वे आत्मा के आधार पर ही परखी जा सकती हैं’’[4] शब्द प्राकृतिक मनुष्य हम में से किसी के लिए भी उपयोग हो सकता है यदि हम ऐसा करते हैं ।

हमें उस संसार में सावधान रहना चाहिए जो कि उन बातों से बहुत दूर चला गया है जोकि आत्मिक हैं । यह जरूरी है कि हम उन बातों को अस्वीकार कर दें जो हमारे स्तर के साथ मेल नहीं खाती हैं, कभी भी उसे न छोड़ें जिसे हम बहुत चाहते हैं—परमेश्वर के राज्य में अनंत जीवन । फिर भी हमारे जीवन में समय समय पर बहुत सी कठिनाइयां आएंगी, वे हमारे नश्वर जीवन का जरूरी हिस्सा हैं । हालांकि, हम इनका सामना करने के लिए अच्छी तरह से तैयार होगें, इनसे सीखेंगे, और इन पर विजय पाएंगे यदि हमारे जीवन की बुनियाद सुसमाचार और हमारे हृदय में उद्धारकर्ता का प्रेम है । भविष्यवक्ता यशायाह ने घोषणा की थी, ‘‘धर्म का फल शांति और उसका परिणाम सदा का चैन और निश्चिंत रहना होगा ।’’[5]

जैसे इसका अर्थ है संसार में रहो परन्तु इस संसार के नहीं, यह जरूरी है कि हम अपने स्वर्गीय पिता से प्रार्थना के द्वारा बातचीत करें । वह चाहता है हम ऐसा करें ; वह हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देता है । उद्धारकर्ता हमें चेतावनी देता है, जैसा कि 3 नफी, अध्याय 18 में लिखा है, ‘‘जागते रहो और सदैव प्रार्थना करते रहो, नहीं तो तुम बहकावे में पड़ जाओगे ; क्योंकि शैतान चाहता है कि …

‘‘इसलिए तुम पिता से सदैव मेरे नाम पर प्रार्थना किया करो ;

‘‘तुम जो कुछ मेरे नाम पर, पिता से पाने का विश्वास कर मांगोगे, और अगर तुम्हारी मांग उचित रही, तब सुनो, वह तुम्हें दिया जाएगा ।’’[6]

मैंने अपनी प्रार्थना की गवाही की शक्ति को 12 वर्ष की आयु में पाया था । मैंने कुछ पैसे कमाने के लिए कड़ी मेहनत की थी और पांच डॉलर बचा पाया था । यह उस महान मंदी के दौरान था, जब पांच डॉलर बहुत अधिक हुआ करते थे—विशेषकर 12 वर्ष के लड़के के लिए । मैंने अपने सारे सिक्के जो कि कुल पांच डॉलर थे, अपने पिता को दिए थे और उन्होंने मुझे इनके बदले पांच डॉलर का नोट दिया था । मैं जानता हूं मैंने कुछ विशेष खरीदने की योजना बनाई थी, इतने साल बाद मुझे याद नहीं वह क्या था । मुझे सिर्फ इतना याद है वह पैसा मेरे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण था ।

उस समय हमारे पास कपड़े धोने की मशीन नहीं थी, इसलिए मेरी मां हर सप्ताह हमारे कपड़े धोने के लिए लाऊंड्री में भेजती थी । कुछ दिनों के बाद लाऊंड्री से हमारे घर गीले कपड़े आते थे जिसे मां हमारे घर के पीछे सुखाने के लिए रस्सी पर डालती थी ।

मैंने पांच डॉलर के नोट को अपनी जीन्स की जेब में रखा था । जैसा कि शायद आप समझ गए होंगे, मेरी जीन्स को पैसे के साथ लाऊंड्री के लिए भेज दिया गया था । जब मुझे समझ में आया कि क्या हुआ होगा, मैं चिन्ता के साथ बीमार हो गया था । मैं जानता था कि लाऊंड्री में कपड़ों को धोने से पहले उनकी जेबों की जांच की जाती थी । यदि मेरा नोट उस समय न भी मिला, तो मुझे मालुम था धुलाई के समय वह कहीं गिर जाएगा और लाऊंड्री में काम करने वाला इसे उठा लेगा और वह नहीं जान पाएगा कि नोट किसे देना है यदि वह इसे वापस करना भी चाहता होगा । मुझे पांच डॉलर वापस मिलने की उम्मीद बहुत ही कम थी—इस बात को मेरी मां ने भी माना था जब मैंने उन्हें बताया कि मेरी जेब में नोट रहा गया था ।

मुझे वह पैसे चाहिये थे ; मुझे उस पैसे की जरूरत थी ; उसे कमाने के लिए मैंने बहुत मेहनत की थी । मैंने महसूस किया, केवल एक ही काम था, जिसे मैं कर सकता था । अपनी परेशानी में, मैं अपने स्वर्ग के पिता के पास गया और उससे प्रार्थना की कि मेरे पांच डॉलर को उस जेब में, गीले कपड़े वापस आने तक किसी तरह सुरक्षित रखना ।

दो बहुत लंबे दिनों के बाद, जब मुझे पता चला कि डिलीवरी ट्रक हमारे गीले कपड़े वापस लाने वाला है, मैं खिड़की के पास बैठा कर इंतजार करने लगा । जैसे ही लांऊड्री का ट्रक आकर रूका, मेरा हृदय जोर जोर से धड़कने लगा । जैसे ही गीले कपड़े हमारे घर के अंदर आए, मैंने जल्दी से अपनी जीन्स उठाई और अपने कमरे की तरफ भागा । कांपते हुए हाथ को मैंने जेब में डाला । जब मुझे तुरन्त कुछ नहीं मिला तो मुझे लगा सबकुछ खो गया है । और तभी मेरी उंगलियों ने उस गीले पांच डॉलर के नोट को छुआ । जैसे ही मैंने इसे जेब से बाहर निकाला, मैंने राहत की सांस ली । मैंने अपने स्वर्ग के पिता से धन्यवाद की प्रार्थना की, क्योंकि मैं जानता था कि उसने मेरी प्रार्थना को सुना था ।

उस समय के बाद से मुझे अनगिनत प्रार्थनाओं का उत्तर मिला है । कोई भी दिन ऐसा नहीं गया है जब मैंने प्रार्थना के द्वारा अपने स्वर्गीय पिता से बातचीत न की हो । यह वह संबंध है जो मैं बहुत संजोकर रखता हूं— इसके बिना मैं कब का खो चुका होता । यदि अपने स्वर्गीय पिता के साथ आपके संबंध इस प्रकार के नहीं है, तो मैं आपसे विनती करता हूं कि आप इसे लक्ष्य बनाएं । जब आप ऐसा करते हैं, आप अपने जीवन में उसकी प्रेरणा और मार्गदर्शन पाने के योग्य हो जाते हैं— यह हम सबों के लिए बहुत जरूरी है यदि हम आत्मिक रूप से इस पृथ्वी पर जीवित रहना चाहते हैं । यह प्रेरणा और मार्गदर्शन ऐसे उपहार हैं जो वह हमें मुफ्त में देता लेकिन हमें इन्हें पाने का प्रयास करना चाहिए । ये बहुमूल्य खाजने हैं !

मैं हमेशा विनम्र और अभारी होता हूं जब मेरा स्वर्गीय पिता अपनी प्रेरणा के द्वारा मुझसे बातचीत करता है । मैंने इसे पहचानना, इस पर भरोसा करना, और इसका अनुसरण करना सीख लिया है । कई बार मुझे इस प्रकार की प्रेरणा मिली है । अगस्त 1987 में फ्रैंकफर्ट, जर्मनी के मंदिर के सर्मपण दिवस को एक नाटकीय अनुभव हुआ था । सर्मपण दिवस के पहले दिन अध्यक्ष एज्रा टाफ्ट बेनसन हमारे साथ थे लेकिन वह घर वापस चले गए थे, इसलिए बाकी बचे सत्रों का संचालन करने का मौका मुझे मिल था ।

शनिवार को हमारा सत्र डच सदस्यों के लिए था जोकि फ्रैकफर्ट मंदिर जिले के थे । मैं नीदरलैंड के हमारे चार बेतरीन मार्गदर्शकों में से एक, भाई पीटर मॉउरीक को अच्छी तरह जानता था । सत्र से ठीक पहले, मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मुझे भाई मॉउरीक को उनके डच सदस्यों से सत्र के दौरान बोलने के लिए कहना चाहिए और कि, असल में, उन्हें पहला वक्ता होना चाहिए । उन्हें उस सुबह मंदिर में न देखने के कारण मैंने एल्डर कार्लोस इ. एसे को पर्ची में लिखकर पुछा क्या पीटर मॉउरीक उस सत्र में मौजूद थे । सत्र शुरू करने से ठीक पहले मुझे एल्डर एसे ने पर्ची दी जिस पर लिखा था कि भाई पीटर मॉउरीक सत्र में मौजूद नहीं थे, वह कहीं और अन्य काम में व्यस्त थे और वह अगले दिन स्टेक के सैनिक सदस्यों के साथ मंदिर में सर्मपण सत्र में आएंगे ।

जब मैं मंच पर लोगों का स्वागत करने और कार्यक्रम के बारे में बताने के लिए खड़ा हुआ, मुझे फिर से प्रेरणा मिली कि मुझ पीटर मॉउरीक को पहला वक्ता के रूप में घोषणा करनी चाहिए । यह मेरी अनुभूति के विरूद्ध था, क्योंकि अभी-अभी मुझे एल्डर एसे ने बताया था कि भाई मॉउरीक निश्चित रूप से मंदिर
में नहीं थे । इसलिए, प्रेरणा पर भरोसा करते हुए मैंने गायक मंडली की प्रस्तुति, प्रार्थना की घोषणा कर दी और बता दिया कि हमारे पहले वक्ता भाई पीटर मॉउरीक होगें ।

जब मैं अपनी सीट पर वापस आया, मैंने एल्डर एसे की ओर देखा और पाया उनके चेहरे पर चिंता के भाव थे । उन्होंने मुझे बाद में बताया था कि जब मैंने भाई मॉउरीक को पहला वक्ता के रूप में घोषणा की, उन्हें अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ । उन्होंने कहा वह जानते थे कि मुझे उन्होंने पर्ची मिल गई थी और कि मैंने इसे पढ़ा था, और वह समझ नहीं पाए कि फिर क्यों मैंने भाई मॉउरीक की वक्ता के रूप में घोषणा की थी, यह जानते हुए कि वह मंदिर में कहीं नहीं थे ।

उस समय के दौरान जब यह सबकुछ हो रहा था, पीटर मॉउरीक क्षेत्रिय मार्गदर्शकों के साथ पोर्थसट्रासे की सभा में थे । जैसे उनकी सभा चल रही थी, वह अचानक एल्डर हॉक्स की ओर मुड़े, जोकि तब क्षेत्रिय प्रतिनिधि थे, और पूछा, ''आप मुझे कितनी जल्दी मंदिर पहुचा सकते हो ?''

एल्डर हॉक्स, जो कि अपनी छोटी र्स्पोटस कार को तेज चलाने के लिए जाने जाते थे, ने जवाब दिया, ''मैं तुम्हें 10 मिनट में वहां पहुंचा सकता हूं ! लेकिन तुम मंदिर क्यों जाना चाहते हो ?''

भाई मॉउरीक ने स्वीकार किया वह नहीं जानते थे कि क्यों वह मंदिर जाना चाहते थे लेकिन वह जानते थे कि उन्हें वहां पहुचँना था । वे दोनों तुरन्त मंदिर के लिए निकल गए ।

गायक मंडली के सुंदर गीत के दौरान, मैं चारों ओर नजर डालता रहा, सोच रहा था कि किसी भी क्षण मुझे पीटर मॉउरीक दिखाई दे जांए । मुझे नहीं दिखे । फिर भी, मुझे आश्चर्य था कि मैं चिंतित नहीं था । मुझे मधुर, पक्का आश्वासन था कि सब ठीक हो जाएगा ।

जैसे ही आरंभिक प्रार्थना समाप्त हुई भाई मॉउरीक ने मंदिर के अगले दरवाजे से प्रवेश किया, फिर भी उन्हें पता नहीं था कि वह वहां क्यों आए थे । जब वह जल्दी जल्दी हॉल में आ रहे थे, उन्होंने मॉनीटर पर मेरी शक्ल देखी और घोषणा सुनी, ''अब हम भाई पीटर मॉउरीक से सुनेंगे ।

एल्डर एसे को चकित करते हुए, पीटर मॉउरीक तुरन्त कमरे में आए और सामाने मंच पर अपना स्थान ग्रहण किया ।

सत्र के बाद, भाई मॉउरीक और मैंने चर्चा की कि उनके बोलने से पहले क्या कुछ हुआ था । मैंने उस प्रेरणा पर मनन किया था जो उस दिन न केवल मुझे लेकिन भाई पीटर मॉउरीक को भी मिली थी । उस आश्चर्यजनक अनुभव ने मुझे इस प्रकार की प्रेरणा पाने के योग्य होने और फिर जब यह मिलता है—इस पर भरोसा करने—और इसका अनुसरण करने के महत्व की एक मजबूत साक्षी दी थी । बिना किसी शंका के मैं जानता हूं कि प्रभु चाहता था कि जो लोग फ्रैकफर्ट मंदिर के सर्मपण सत्र में मौजूद थे, वे उसके सेवक भाई पीटर मॉउरीक की प्रभावशाली और मर्मस्पर्शी गवाही सुनें ।

मेरे प्रिय भाइयों और बहनों, स्वर्गीय पिता के साथ बातचीत करना जीवन के तूफानों और कठिनाइयों का सामना करने के लिए उससे प्रार्थना करना और उसकी प्रेरणा पाने सहित—जरूरी है । प्रभु हमें उसके निकट आने का निमंत्रण देता है, और वह हमारे निकट आएगा ।[7] यदि हम परिश्रम से उसकी खोज करते हैं, तो हम उसे पाएंगे । जैसे ही हम वो सब करते हैं, हम उसकी आत्मा को अपने जीवन में महसुस करेंगे, हमें अभिलाषा और मजबूती से खड़े होनें की हिम्मत और योग्यता में ढ़ढ़ रहने देती है–''पवित्र स्थानों में खड़े रहना, और हिलना नहीं ।''[8]

जैसे हमारे चारों ओर संसार बदल रहा है और हमारी आंखों के सामने समाज के नैतिक मूल्यों की डोर टुट रही है, काश हम प्रभु के बेशकीमती वादों को याद रखें जिसे वह उस में विश्वास करनेवालों से करता है : ''मत डर, क्योंकि मैं तेरे संग हूं, इधर उधर मत ताक, क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूं ; मैं तुझे दृढ़ करूंगा और तेरी सहायता करूंगा, अपने धर्ममय दहिने

हाथ से मैं तुझे संभाले रहूंगा ।''[9]

क्या आशीष है ! काश हमें भी यह आशीष मिले, मैं हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता, यीशु मसीह के पवित्र नाम में प्रार्थना करता हूं, आमीन ।

विवरण

1. Jonathan Sacks, "Reversing the Decay of London Undone," *Wall Street Journal,* August 20, 2011, online.wsj.com ; emphasis added. *Note:* Lord Sacks is the chief rabbi o f the United Hebrew Congregations of the Commonwealth.
2. निर्गमन 20:3–4, 7–8, 12–17 ।
3. मरोनी 8:18 ।
4. 1 कुरुन्थियों 2:14 ।
5. यशायाह 32:17 ।
6. 3 नफी 18:18–20 ।
7. सिद्धांत और अनुबंध 88:63 ।
8. सिद्धांत और अनुबंध 87:8 ।
9. यशायाह 41:10 ।

हमारे समय के लिए शिक्षाएं

प्रत्येक माह के चौथे रविवार मलकिसिदक पौरोहित्य और सहायता संस्था सभाओं पर, ''हमारे समय के लिए शिक्षाएं'' के लिए समर्पित रहना जारी रहेगा । प्रत्येक पाठ हाल ही की जनरल सम्मेलन में दी गई एक या अधिक वार्ताओं में से तैयार किया जा सकता है (नीचे चार्ट देखें) । स्टेक और जिला अध्यक्ष उन वार्ताओं का चयन कर सकते हैं जिनका उपयोग किया जाना है, या वे इस जिम्मेदारी को धर्माध्यक्षों और शाखा अध्यक्षों को दे सकते हैं । मार्गदर्शकों को मलकिसिदक पौरोहित्य भाइयों और सहायता संस्था बहनों को एक ही वार्ता का अध्ययन एक ही रविवार को करने पर जोर देना चाहिए ।

वे जो चौथे-रविवार पाठ में उपस्थित होते हैं उनसे कक्षा में हाल ही की जनरल सम्मेलन की पत्रिका की प्रति लाने के लिए उत्साहित किया जाता है ।

वार्ताओं में से पाठ तैयार करने के लिए सुझाव

प्रार्थना करें कि पवित्र आत्मा वार्ता(ओं) का अध्ययन करते और सीखाते समय आपके साथ रहें । पाठ की तैयारी करते समय आपके मन में अन्य सामग्रियों का उपयोग करने का विचार आएगा, लेकिन सम्मेलन वार्ताएं ही स्वीकृत पाठयक्रम हैं । आपका कार्यभार गिरजे की हाल ही के जनरल सम्मेलन में सीखाए सुसमाचार को सीखने और जीने में दूसरों की मदद करना है ।

वार्ता(ओं) की समीक्षा करें, उन नियमों और सिद्धांतों की खोज करें जो कक्षा के सदस्यों की जरूरतों को पूरा करते है । कहानियों, धर्मशास्त्र संदर्भों, और वार्ताओं के कथनों की खोज करें जो आपको इन सच्चाइयों को सीखाने में मदद करेंगे ।

नियमों और सिद्धांतों को सीखाने के लिए एक रूप-रेखा बनाएं । आपकी रूप-रेखा में वे प्रश्न शामिल होने चाहिए जो कक्षा के सदस्यों की मदद करेंगे :

- वार्ता(ओं) में नियमों और सिद्धांतों की खोज करें ।
- उनके अर्थ के बारे में विचार करें ।
- समझ, विचार, अनुभवों, और गवाहियों को बांटे ।
- इन नियमों और सिद्धांतों को उनके जीवन में लागू करें ।

महिने के पाठों को सीखाया जाता हैं	चौथा-रविवार पाठय सामग्री
नवंबर 2011–अप्रैल 2012	नवंबर 2011 *लियाहोना* * में प्रकाशित वार्ताएं
मई 2012–अक्टूबर 2012	मई 2012 *लियाहोना* * में प्रकाशित वार्ताएं

**ये वार्ताएं कई भाषाओं में* conference.lds.org *पर उपलब्ध हैं ।*

अध्यक्ष डिटयर एफ. उक्डॉर्फ द्वारा
प्रथम अध्यक्षता में द्वितीय सलाहकार

आप उसके लिए महत्व रखते हो

आत्मा की योग्यता को नापने के लिए प्रभु संसार से बहुत भिन्न प्रकार का पैमाने का उपयोग करता है ।

मूसा, संसार में ज्ञात महानत्तम भविष्यवक्ताओं में से एक था, उसे फ़िरौन की बेटी ने पाला था और उसने अपने जीवन के 40 साल मिस्र के राजसी महल में व्यतीत किए थे । वह उस प्राचीन राज्य की महिमा और भव्यता से अच्छी तरह से परिचित था ।

सालों बाद, भव्य और शानदार शक्तिशाली मिस्र से बहुत दूर, पहाड़ की चोटी पर, मूसा परमेश्वर के सामने खड़ा था और उससे आमने-सामने इस प्रकार बात कर रहा था जैसे कोई व्यक्ति अपने मित्र से बातें करता है ।[1] उस भेंट के दौरान, परमेश्वर ने मूसा को अपने हाथों की कारीगरी और अपने काम और महिमा की एक झलक दिखाई थी । जब वह दिव्यदर्शन समाप्त हुआ था, मूसा भूमि पर कई घंटों तक पड़ा रहा था । जब उसकी शक्ति पूर्णरूप से वापस आई, उसने कुछ ऐसा महसूस किया जिसे उसने फ़िरौन के दरबार में इतने सालों में कभी उसके साथ नहीं हुआ था ।

उसने कहा, ''मैं जानता हूं कि मनुष्य कुछ नहीं है ।''[2]

जितना हम अपने आपको समझते हैं हम उससे कम हैं

जितना अधिक हम सृष्टि के बारे में सीखते, उतना अधिक हम समझते हैं—लगभग एक छोटा सा भाग—जो मूसा जानता था । सृष्टि इतनी विशाल, रहस्यपूर्ण, और महिमापूर्ण है कि मानव समझ के लिए उसको समझना असंभव है । ''मैंने अनगिनत संसारों की रचना की है,'' परमेश्वर ने मूसा से कहा था ।[3] रात का शानदार नजारा इस सच्चाई का गवाह है ।

कुछ बातें हैं जिनसे मैं बहुत प्रभावित हुआ हूं, जब मैं घनी काली रात को समुद्र और द्वीपों के आर-पार ऊपर से उड़ान भरते हुए कॉकपीट से बाहर करोड़ों तारों की महिमा को देखता था ।

खगोलशास्त्रियों ने सृष्टि के तारों को गिनने का प्रयास किया है । वैज्ञानिकों के एक समूह ने अनुमान लगाया है कि हमारी दूरबीन से दिखाई देने वाले तारों की संख्या संसार के तटों और रेगिस्तान में पाई जाने वाले रेत के सभी कणों से दस गुना अधिक है ।[4]

यह अंदाजा अतीत के भविष्यवक्ता इनोक की घोषणा के समान है : ''क्या मनुष्य के लिए यह संभव है कि वह पृथ्वी के कणों की गणना कर सके, हां, इसके समान लाखों पृथ्वी और भी हैं, यह आपकी रचनाओं की संख्या का आरंभ नहीं है ।''[5]

परमेश्वर की रचनाओं की व्यापकता के अनुसार, इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि राजा बिन्यमीन ने अपने लोगों को ''हमेशा परमेश्वर की महानता और अपनी शून्यता को याद रखने की'' सलाह दी थी ।[6]

जितना हम मानते हैं हम उससे महान हैं

लेकिन यद्यपि मनुष्य कुछ नहीं है, मुझे यह विचार कर आश्चर्य और अचंभा होता है कि परमेश्वर की दृष्टि में व्यक्ति की कीमत बहुत है ।''[7]

और जब हम सृष्टि की व्यापकता को देखते और कहते हैं, ''सृष्टि की महिमा की तुलना में मनुष्य क्या है ?'' परमेश्वर ने स्वयं कहा था हमारे लिए उसने सृष्टि की रचना की थी ! उसका काम और महिमा—इस शानदार सृष्टि का उद्देश्य मानवजाति को बचाना और उत्कर्ष करना है ।[8] अन्य शब्दों में अनंतता की व्यापकता, महिमा और रहस्यों के अंत हीन स्थान और समय को आप और मेरे जैसे साधारण नश्वर लोगों के लिए बनाया । हमारा स्वर्गीय पिता ने सृष्टि की रचना की थी ताकि हम अपने योग्यता को उसके बेटों और बेटियों के रूप में पा सकें ।

यह मनुष्य का विरोधाभास है : परमेश्वर की तुलना में, मनुष्य कुछ नहीं है ; फिर भी हम परमेश्वर के लिए सबकुछ हैं । जब अनंत सृष्टि की तुलना करते हैं हम इसके सामने कुछ भी प्रतीत नहीं होते हैं, फिर भी हमारे भीतर सीने में अनंता की ज्वाला प्रज्जवलित होती है । हमारे पास उत्कर्ष हमारी पहुंच के भीतर—अगिनत संसार की—अतुल्यनीय प्रतिज्ञा है । और हमें इसे पाने में मदद करना यह परमेश्वर की महान इच्छा है ।

घमण्ड की मूर्खता

शैतान जानता है कि परमेश्वर के बच्चों को भटकाने के उसके प्रभावशाली औजारों में

से एक है उस विराधाभास के लिए मनुष्य का ध्यान बटाना । कुछ को, वह उनकी घमण्डपूर्ण भावनाओं की ओर आकर्षित करता है, उन्हें उनकी स्वयं के महत्व और अपराजयता की कल्पना में विश्वास करने के लिए बहकाता और उकसाता है । वह उन्हें कहता है वे साधारण नहीं हैं और योग्यता, जन्मसिद्ध अधिकार, या समाजिक स्तर के कारण, वे उनके आस-पास के महौल से अलग हैं । वह उन्हें इस निष्कर्षता पर ले जाता है कि वे किसी नियमों के आधीन नहीं है और उन्हें दूसरों की समस्याओं से कोई मतलब नहीं है ।

ऐसा कहा जाता है कि अब्राहम लिंकन को यह कविता पसंद थी :

ओह नश्वरता की आत्मा मनुष्य क्योंकर
घमण्ड करती । है ?
तेजी से गिरते तारे, तेजी से उड़ते बादल,
बिजली कड़कने की चमक, लहर के थपड़े,
मनुष्य जीवन गुजारते हुए अपनी कब्र की
आरामगाह में पहुच जाता है ।[9]

यीशु मसीह के शिष्य जानते हैं कि अनंतता के मुकाबले में स्थान और समय में इस नश्वर भू-मंडल पर हमारा अस्तित्व मात्र ''एक मामूली क्षण'' के समान है ।[10] वे जानते हैं कि व्यक्ति की सच्ची योग्यता का उससे कोई लेना देना नहीं है जिसे संसार बहुत मान्यता देता है । वे जानते हैं कि आप पूरे विश्व की धन-दौलत एकत्र करके भी स्वर्ग के राज्य में एक रोटी भी नही खरीद सकते ।

जो ''परमेश्वर के राज्य के वारिस'' होगें[11] वे लोग हैं जो बच्चे के समान समर्पित, विनम्र, दीन, धैर्यवान, प्रेम से भरपूर है ।''[12] ''क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा ; और वह जो अपने आप दीन करेगा ऊंचा किया जाएगा ।''[13] ये शिष्य यह भी जानते हैं कि जब वे अपने लोगों की सेवा करते हैं तो वे परमेश्वर की सेवा करते हैं ।''[14]

हमें भूला नहीं गया है

उत्साहहीनता के द्वारा, शैतान का धोखा देने का अन्य तरीका है । वह हमारे ध्यान को हमारी स्वयं की विशेषता की ओर केंद्रीत करने का प्रयास करता है जब तक कि हमें स्वयं अपनी योग्यता पर संदेह नहीं होता । वह हमेशा कहता है कि हम बहुत छोटे हैं हम पर कोई ध्यान नहीं देता है—विशेषकर परमेश्वर ।

मैं आपके साथ एक व्यक्तिगत अनुभव को बांटता हूं शायद उनकी मदद करेगा जो अपने आपको मामूली, भूला-हूआ, या अकेला महसूस करते हैं ।

बहुत सालों पहले मैं पायलट के प्रशिक्षण के लिए सयुक्त राज्य अमरीका गया था । मैं, पश्चिम जर्मनी का युवक जो चैकस्लोवाकिया में पैदा हुआ पूर्वी जर्मनी में बड़ा हुआ और जो बहुत मुश्किल से अंग्रेजी बोल पाता था, घर से बहुत दूर था । मुझे अपने प्रशिक्षण स्थान टैक्सास तक अपनी यात्रा अच्छी तरह याद है । मैं हवाई जहाज में बैठा था, मेरी बगल में था वह भारी-भरकम दक्षिण-अमरीकी उच्चारण में बातें कर रहा था । मुझे उसकी बात बहुत मुश्किल से समझ आ रही थी । मुझे शक हुआ क्या मुझे बिलकुल ही गलत भाषा सीखाई गई थी । मुझे घबाराहट होने लगी थी कि मुझे पायलट प्रशिक्षण में उच्च स्थान पाने के लिए उन पायलट प्रक्षिार्थियों से मुकाबला करना होगा जो स्थानीय अंग्रेजी बोलते थे ।

जब मैं टैक्सासा के छोटे शहर बीग स्प्रिंग में, हवाई संचालन केंद्र में पहुंचा, मैंने अंतिम-दिनों के संत की शाखा की खोज की और पाया, जिसमें थोड़े से शानदार सदस्य थे जो किराए के कमरों में केंद्र के भीतर सभा करते थे । सदस्य छोटे से भवन का निर्माण करने की प्रक्रिया में थे जहां वे स्थाई रूप से प्रार्थना सभा कर सकें । उन दिनों में सदस्य नए भवन के लिए बहुत परिश्रम करते थे ।

दिन-प्रतिदिन मैं अपने पायलट प्रशिक्षण और पढ़ने के लिए बहुत अधिक परिश्रम करता और खाली समय में नए सभाघर के लिए काम करता था । वहां मुझे पता चला कि दो-दो-चार नृत्य की ताल नहीं बल्कि एक लकड़ी का टुकड़ा होता है । कील ठोकते समय मैंने अपने अंगूठे को गायब करने की विद्या सीखी थी ।

मैं सभाघर बनाने में इतना समय व्यतीत करता था कि हमारे शाखा अध्यक्ष—जो हमारे विमान प्रशिक्षक भी थे—चिंतित थे कि मुझे अपना अधिकतर समय अध्ययन करने में लगाना चाहिए ।

मेरे मित्र और साथी प्रशिक्षार्थी भी खाली समय की गतिविधियों में व्यस्त रखते थे जो कि मुझे भय है कि वे आजकल की *युवा बल के लिए* पुस्तिका स्तर से मेल नहीं खाती थी, मुझे पश्चिमी शाखा की इस छोटी शाखा में भाग लेना अच्छा लगता था, जहां मैंने बढ़ई का काम सीखा और मैंने अपनी बुलाहट को पुरा करने के लिये एल्डर परिषद और रविवार विद्यालय में सीखाते समय अंग्रेजी में सुधार किया था ।

उस समय, बिग स्पिंग अपने नाम के विपरीत एक छोटा, मामूली, और अनजान शहर था । और अक्सर मैं अपने स्वयं को भी ऐसा ही महसूस करता था अनजान, मामूली, और बिलकुल अकेला । फिर भी, मुझे कभी संदेह नहीं हुआ कि प्रभु मुझे भूल गया था या वह कभी मुझे वहां खोज पाएगा । मुझे पता था कि स्वर्गीय पिता को इस बात से कोई मतलब नहीं था कि मैं कहां था, पायलट प्रशिक्षण में मेरा पद क्या था, या गिरजे में मेरी क्या बुलाहट थी । उसे केवल इस बात से मतलब था कि मैं वह सब कर रहा था जो मुझे करना चाहिए था, कि मेरा हृदय उसकी ओर था, और मैं अपने आस-पास के लोगों की मदद करता था । मैं जानता था यदि मैं अपना सर्वोत्तम करूंगा तो, सबकुछ अच्छा होगा । **और सबकुछ ठीक था ।**[15]

आखिरी को प्रथम किया जाएगा

प्रभु को इस बात ध्यान नहीं रखता कि हम अपना दिन संगमरमर के हॉल में काम करते हुए व्यतीत करते हैं या जानवरों के अस्तबल में । वह जानता है कि हम कहां हैं, चाहे हमारी परिस्थितियां कितनी भी सादगीपूर्ण क्यों ने हों । वह अपने तरीके और हम अपने पवित्र उद्देश्यों को पूरा करने के लिए उनका उपयोग करता है जिनके हृदय उसकी ओर रहते हैं ।

परमेश्वर जानता है कि कुछ महानत्तम लोग ऐसे हैं जो इतिहास के पन्नों में पाए ही नहीं जाते हैं । वे आशीषित, विनम्र व्यक्ति होते हैं जो उद्धारकर्ता का अनुकरण करते और अपने जीवन के दिन भलाई करने में गुजारते हैं ।[16]

ऐसी एक दंपति, मेरे मित्र के माता-पिता,

ने मुझे इस सिद्धांत का उदाहरण दिया था। पति यूटाह में एक इस्पात के कारखाने में काम करते थे। दोपहार के खाने के समय वह अपने धर्मशास्त्र या गिरजे की पत्रिका को पढ़ते थे। जब अन्य कामगारों ने यह सब देखा, वे उसका मजाक उड़ाते और उसके विश्वास को चुनौती देते थे। जबकभी वे कुछ कहते, वह शिष्टा और आत्म-विश्वास के साथ उनके साथ बात करते थे। उसने कभी भी उनके अनादर को उसे गुस्सा या विचलित नहीं होने दिया था।

सालों बाद मजाक उड़ाने वालों में से एक बहुत बीमार पड़ गया। अपनी मृत्यु से पहले, उसने प्रार्थना की उसकी अंत्येष्टि पर वह विनम्र व्यक्ति वार्ता द—जोकि उसने किया।

इस विश्वासी गिरजे के सदस्य के पास समाजिक तौर पर कोई पद या धन-दौलत नहीं थी, लेकिन उसने उन सबको बहुत प्रभावित किया था जो उसे जानते थे। वह अपने साथी कामगार को बचाते समय र्दुघटना में मारा गया था।

एक साल के भीतर उसकी विधवा का मस्तिष्क का आप्रेशन हुआ था, जिसके कारण वह चल नहीं पाती थी। लेकिन लोगों को उसके पास आकर समय व्यतीत करना अच्छा लगता था क्योंकि वह सुन सकती थी। वह याद रखती थी। वह देखभाल करती थी। लिखने में अयोग्य, वह अपने बच्चों और नाती-पोतों के टेलिफोन नम्बर याद रखती थी। वह जन्मदिन और सालगिरहों को याद रखती थी।

जो उसके पास आते थे वे जीवन के बारे में और अपने स्वयं के विषय में सीखने आते थे। वे उसके प्यार को महसुस करते थे। वे जानते थे वह ध्यान रखती है। उसने कभी शिकायत नहीं की वह अपने दिन दूसरों के जीवन को आशीषित करने में व्यतीत करती थी। उसके एक मित्र ने कहा था यह स्त्री उन कुछ लोगों में से एक थी जिन्हें वह जानती जो सच में यीशु मसीह के प्रेम और जीवन का जीते हैं।

यह दंपति ऐसा कहने वालों में सबसे आगे होते कि इस संसार में उनका कोई महत्व नहीं है। लेकिन किसी व्यक्ति की योग्यता को नापने के लिए प्रभु संसार से बहुत भिन्न पैमाने का उपयोग करता है। वह इस विश्वासी दंपति को जानता था ; वह उनसे प्रेम करता है। उनके काम प्रभु में उनके मजबूत विश्वास की जीवित गवाही हैं।

आप उसके लिए महत्व रखते हैं

मेरे प्यारे भाइयों और बहनों, यह सच्चाई हो सकती है कि सृष्टि की व्यापकता की तुलना में मनुष्य कुछ भी नहीं है। कभी-कभी हमें भी मामूली होने, अदृश्य, अकेले, या भूल-गए का एहसास हो सकता है। लेकिन हमेशा याद रखो—आप उसके लिए महत्व रखते हैं ! यदि कभी आपको संदेह हो तो इन चार सिद्धांतों पर विचार करना :

पहला, परमेश्वर दीन और विनम्र लोगों से प्रेम करता है, क्योंकि वे ''स्वर्ग के राज्य में महान हैं।''[17]

दूसरा, प्रभु ''उसके सुसमाचार की घोषणा संसार के कोने-कोने में प्रचार करने के लिए कमजोर और साधारण लोगों पर भरोसा करता है।''[18] उसने ''संसार के कमजोर लोगों को आगे आने और शक्तिशाली और मजबूत लोगों को असफल''[19] और ''उन्हें शर्मिदा करने के लिए चुना है जो ताकतवर हैं।''[20]

तीसरा, चाहे आप कहीं भी रहें, चाहे आपकी परिस्थितियां कितनी दीन क्यों न हों, चाहे आपका रोजगार कितना भी छोटा क्यों न हो, चाहे आपकी क्षमता कितनी भी सीमित क्यों न हों, चाहे आपका रूप-रंग कितना भी साधारण क्यों न हो, या गिरजे में आपकी बुलाहट कितनी भी छोटी प्रतीत होती हो, आप अपने स्वर्गीय पिता के लिए अदृश्य नहीं हैं। वह आपसे प्रेम करता है। वह आपके दीन हृदय और प्रेम और दया आपके कामों को जानता है। ये सब मिलकर, आपकी ईमानदारी और विश्वास की स्थाई गवाही बनाते हैं।

चौथा और अंतिम, कृपया समझें कि जो आप अभी देखते और अनुभव करते हो वह हमेशा नहीं रहेगा। आप हमेशा अकेलापन, दुख, दर्द, या निराशा महसूस नहीं करोगे। आपके पास परमेश्वर की विश्वसनीय प्रतिज्ञा होगी कि वह आपको न कभी भूलेगा न ही कभी छोड़ेगा जो अपने हृदयों को उसकी ओर लगाते हैं।[21] इस प्रतिज्ञा में आशा और विश्वास रखें। अपने स्वर्गीय पिता से प्रेम करना सीखें और बातों और कार्यो से उसके शिष्य बनें।

सुनिश्चित रहें यदि आप अटल रहोगे, उसमें विश्वास करोगे, और आज्ञाओं का पालन करने में विश्वसनीय रहोगे, एकदिन आप पौलुस को प्रकट गई प्रतिज्ञाओं का अनुभव करोगे : ''कि जो आंख ने नहीं देखी, और कान ने नहीं सुना, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ीं, वे ही है, जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिये तैयार की हैं।''[22]

भाइयों और बहनों, सृष्टि में सबसे ताकतवर जन आपकी आत्मा का पिता है। वह आपको जानता है। वह परिपूर्ण प्रेम से आपको प्रेम करता है।

परमेश्वर न केवल आपको इस ग्रह में नश्वर प्राणी के रूप देखता है जो कुछ समय के लिए जीवित रहेगा—वह आपको उसके बच्चे के रूप में देखता है। वह आपको उस रूप में देखता जिसके आप योग्य हो और जिसके लिए आपको बनाया गया है। वह चाहता है कि आप जानें कि आप उसके लिए महत्व रखते हैं।

काश हम हमेशा विश्वास, भरोसा, करें और अपने जीवन को उचित रूप से जीएं ताकि हम अपने अनंत योग्यता और क्षमता को समझ सकेंगे। काश हम अपने स्वर्गीय पिता की अनमोल आशीषों के योग्य हों जो हमारे लिए रखी गई हैं, उसके पुत्र, यीशु मसीह के नाम में यह मेरी प्रार्थना है, आमीन।

विवरण

1. देखें मूसा 1:2।
2. मूसा 1:10।
3. मूसा 1:33।
4. Andrew Craig, "Astronomers Count the Stars," BBC News, July 22, 2003, http://news.bbc.co.uk/2/hi/science/nature/3085885.stm देखें।
5. मूसा 7:30।
6. मुसायाह 4:11।
7. अनुबंध और सिद्धांत 18:10।
8. देखें मूसा 1:38–39।
9. William Knox, "Mortality," in James Dalton Morrison, ed., *Masterpieces of Religious Verse* (1948), 397।
10. अनुबंध और सिद्धांत 121:7।
11. 3 नफी 11:38।
12. मुसायाह 3:19।
13. लूका 18:14 ; 9–13 आयतें भी देखें।
14. मुसायाह 2:17।
15. डिटयर एफ. उक्डॉर्फ अपनी कक्षा में प्रथम आए थे।
16. देखें प्रेरितों के काम 10:38।
17. मत्ती 18:4 ; 1–3 आयतें भी देखें।
18. अनुबंध और सिद्धांत 1:23।
19. अनुबंध और सिद्धांत 1:19।
20. 1 कुरिन्थियों 1:27।
21. देखें इब्रानियों 13:5।
22. 1 कुरिन्थियों 2:9।

© 2011 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित। भारत में छपी। अंग्रेजी अनुमति : 6/10। अनुवाद अनुमति : 6/10।
Visiting Teaching Message, November 2011 का अनुवाद। Hindi। 09771 294